



आज हम विचार करते हैं, एक ऐसी मनोवृत्ति के बारे में, जो पाँच-छः साल के लगभग बीस से तीस प्रतिशत बच्चों में देखने को मिलती है। ये हमेशा डींगें हॉकने हैं और कुछ इस तरह बोलते रहते हैं- “आपने आंटीजी आज पकौड़े बनाए हैं, अच्छे हैं, मगर मेरी दादी तो और अच्छे पकौड़े बनाती हैं (हाथ से दिखाकर) इतने बड़े। उस पकौड़े को बीच में रखकर हम सब लोग चम्मच से काट-काट कर खाते हैं।”, “आपके घर में इतनी छोटी जैम की बोटल है? मेरे पापा ने तो बीस किलो जैम की बोटल लाई है।”, “मामा

बच्चे में इतनी अप्रसंगिक बातें कहां से आ गईं। फिर वह बच्चा सबके सामने कार्टून बन जाता है। उसे सब चिढ़ाते-छेड़ते रहते हैं। माता-पिता भी सब कुछ हँसी में ले लेते हैं। सच पूछा जाए तो इस तरह के बच्चों का सबसे अच्छा इलाज उसके माता-पिता ही कर सकते हैं। माता-पिता उसको समझा सकते हैं कि इस तरह की बातें नहीं करनी चाहिए। ऐसा क्या सचमुच में होता है। डींगें हॉकने से सब हँसते हैं, छेड़ते हैं, नाम रख देते हैं। माता-पिता बच्चे को



मनपसंद लड़की को हासिल न कर पाने पर सिर पटकता है, पछताता है। आगे योजना बनाकर एक से बढ़कर एक कपड़े खरीदवाता है, बाइक

बच्चों का बड़बोलापन

परेशानी का सबब बनने

ऐसा क्या सचमुच में होता है। डींगें हॉकने से सब हँसते हैं, छेड़ते हैं, नाम रख देते हैं। माता-पिता बच्चे को समझा-बुझाकर काबू में कर लेते हैं तो अच्छी बात होती है, बच्चा सुधर जाता है। अगर बच्चे का बचपना समझकर उसे ढील दे देते हैं तो बच्चा एक लाइन नहीं पढ़ पाता मगर सबसे कहता फिरता है कि परीक्षा के लिए उसने सारी तैयारियाँ कर ली हैं।



जी आपने मेरे लिए जो कपड़े लाए हैं? ये तो बहुत सस्ते हैं, मेरे चाचाजी तो दस हजार रुपये के कपड़े लाए हैं।”, “हमने एक जहाज खरीदा है। बीच में मैं बैठता हूँ। आजू-बाजू मेरी बहनें बैठती हैं और नीचे से मेरे पापा रिमोट कंट्रोल से हवाई जहाज को बैलेंस करते हैं।” बच्चे का ऐसा बड़बोलापन सबको हँसाता है। साथ-साथ यह सोचने के लिए भी बाध्य करता है कि

समझा-बुझाकर काबू में कर लेते हैं तो अच्छी बात होती है, बच्चा सुधर जाता है। अगर बच्चे का बचपना समझकर उसे ढील दे देते हैं तो बच्चा एक लाइन नहीं पढ़ पाता मगर सबसे कहता फिरता है कि परीक्षा के लिए उसने सारी तैयारियाँ कर ली हैं। ऐसे बच्चों को सुधारने के लिए एक और मौका आता है। दस-बारह साल का बच्चा अगर अपने मन में आत्म-निरीक्षण करता है तो सुधर जाता है। वह समझ जाता है, अप्रसंगिक और बेतुकी बातें लोगों से कहते फिरने से क्या फायदा? अपनी ही

जगहेंसाई है। अपनी ही बर्बादी है। अच्छा तो यही है कि पढ़-लिखकर कुछ बना जाए। इस तरह भी बच्चे सुधर नहीं पाते हैं तो उनमें एक तरह का पागलपन घर कर जाता है। पंचवर्षीय योजना में कम से कम अंक प्राप्त कर मैट्रिक पास कर लेता है और लोगों से कहता फिरता है कि वह कमांडो बनना चाहता है, दुश्मनों के छक्के छुड़ाना चाहता है, होटल ताज जैसे मौके पर दुश्मनों को ढेर कर देना चाहता है। युवा होते-होते वह ग्रेजुएट भी नहीं हो पाता। एक नौकरी भी नहीं तलाश सकता मगर शादी के सपने देखने लगता है। कभी-कभी तो

खरीदवाता है और सुबह से शाम तक हर जगह लड़की फाँसने में लग जाता है परन्तु लड़कियाँ भैया कह देती हैं तो उसका हाल और बेहाल हो जाता है। पछताने के अलावा उसके सामने कोई रास्ता नहीं बचता।

वह जब कुंठा ग्रसित हो जाता है, तब माता-पिता, भाई-बहन पर अपना गुस्सा उतारता है। उनसे हमेशा बहस करता रहता है, चिढ़ता रहता है, मार-पीट भी करता है। गुस्सा बर्दाश्त न कर पाकर जुर्सियाँ, पलंग, किचन वियर्स आदि को तोड़-फोड़कर अपना गुस्सा उतारना चाहता है। यह एक किस्म का पागलपन है और इस तरह के पागलपन का इलाज भी नहीं होता है। अतः आप माता-पिता हैं तो अपने बड़बोलेपन वाले बच्चे को पहचानें, उसे समझाएँ-बुझाएँ, जीवन का यथार्थ बताएँ। आवश्यकता पड़े तो मनोरोग विशेषज्ञ से सलाह लें। किसी भी मर्ज का जल्द से जल्द इलाज करने में ही कामयाबी हो सकती है।

- आर. सूर्य कुमारी

लेडीज़ ज़ोन



बेडरूम टाइम बनाएँ क्वालिटी टाइम

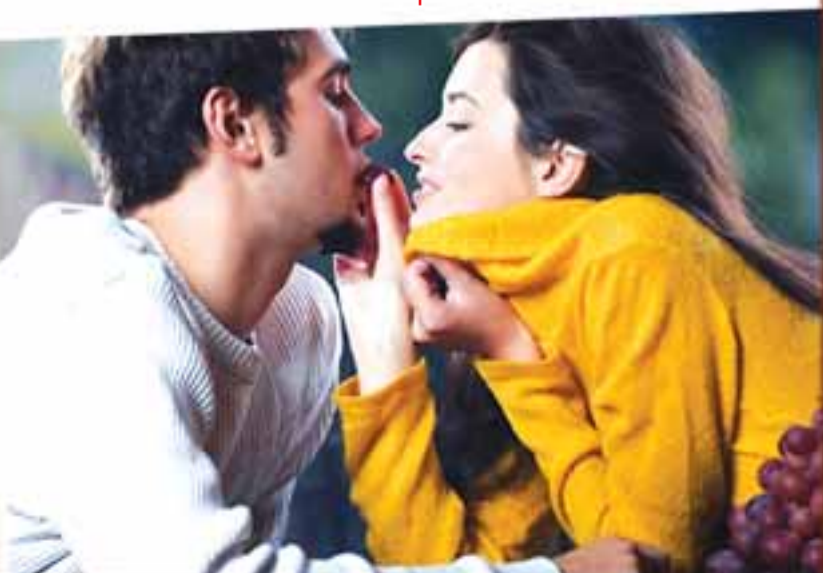
यह सच है कि जिंदगी महज रोमांस ही नहीं है, इसके अतिरिक्त भी कुछ और है। दुनिया के तमाम झंझट, जीने की जहजहद

लिए बिताने में अपराधबोध कैसा? बेडरूम में जब पति की बाँहों में समायी हों, तब बच्चों, परिवार-बजट, रिशतों की कड़वाहट, काम की टेंशन जैसे मुद्दों में अपने को न उलझाए रखें। अपने को सीमित कर एंजॉय करें। प्रेमरस में सराबोर हो जाएँ। फिर देखिए, कैसे आपकी बैट्री रीचार्ज हो जाती है। कॉम्प्लीमेंट्स देकर पार्टनर का मूड बनाएँ अपनी तारीफ सभ्य का आत्म-विश्वास बढ़ाती है। तारीफ सुनकर मूड बन जाता है। प्रसिद्ध सैक्सोलॉजिस्ट डॉ. विनय भंडारी के अनुसार पार्टनर की तारीफ से उसका कॉन्फिडेंस लेवल बढ़ता है अगर पार्टनर की

फिजिकल ब्यूटी की तारीफ करें तो ज्यादा मजेदार होगा। आज आधुनिक स्त्रियाँ शर्मोहया की पुतालियाँ नहीं रह गईं, धीमे सुर में मधुर बोलें आवाज तो कुदरत की देन है, लेकिन उसे आप कैसे काम में लाते हैं, यह आपके अपने ही हाथ में है। कर्कश तीखी आवाज सारा मूड चौपट कर सकती है। साथ ही शब्दों के चुनाव का भी ध्यान रखें। रिलेशन एक्सपर्ट डॉ. रिया कहती हैं, “अपनी चाहत का इजहार करते हुए ऐसे शब्दों का प्रयोग करें, जो पार्टनर को आपका दीवाना बना दें।” एक सफल खुशहाल मैरिज लाइफ के लिए आपको अपने पार्टनर को रिझाना, उसका मूड बनाना आना चाहिए। इसके लिए छोटी-छोटी बातें भी मायने रखती हैं। यहाँ अनौपचारिकता में भी औपचारिकता इसकी खूबसूरती कायम रख सकती है।

जैसा हो, लेकिन जो भी, जैसा भी है, टेस्टफुली डेकोरेटेड हो। ऐसा कि कमरे में आते ही लगे कि आप अपने कंफर्ट ज़ोन में हैं। इसे पर्सनल टच देती रहें। पार्टनर का पसंद का ध्यान ज़रूर रखें, क्योंकि यह आप दोनों का साझा रूम है। थोड़ी देर थोड़ा-सा स्वार्थी हो जाएँ ऑप्टर ऑल जिंदगी बार-बार नहीं मिलती, इस पर सिर्फ दूसरों का ही हक नहीं है। कुछ वक्त अपने लिए अपनी खुशी के

वह भी इस हाईटेक जमाने में व्यक्ति पर इस कदर हावी रहते हैं कि वे हर रिश्ते पर भारी पड़ने लगते हैं। पति-पत्नी का रिश्ता भी इसी की भेंट चढ़कर मुरझाने लगता है। शुरूआत का खिलापन, ताजगी कहीं बरकरार रह पाते हैं। ‘हम तो डूबेंगे सनम तुम्हें भी ले डूबेंगे’ की तर्ज पर प्यार की नाव गोते खाने लगती है। पति-पत्नी के बीच रोमांस बना रहे, प्यार बढ़ता रहे, इसके लिए बेडरूम की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। बाकी दुनिया की बातें करने के लिए तो पूरा घर मौजूद है ही। बेडरूम को तो बस प्यार का पवित्र मंदिर ही बना रहने दें तो बेहतर। बेडरूम यानी बेडरूम में कोई झगड़ा-वगड़ा नहीं। यह तनावमुक्त रहने का ज़ोन है। अपना माइंडसेट ऐसा बना लें कि इसे मस्ती-रूम के रूप में ही लेना है तो ऐसा ही होगा। यहाँ पर होने वाली चुहलबाजियों का रिश्ते को मधुरता प्रदान करने में खासा योगदान रहता है। अक्सर लोग बेडरूम के रख-रखाव पर ध्यान नहीं देते और उसे पब्लिक प्लेस बना लेते हैं। ज़रूरी नहीं कि आपका बेडरूम आलीशान फाइवस्टार होटल के



ब्यूटी ज़ोन



* सिर व मस्तक पर रोज तेल लगाना चाहिए। * दिन में जितनी बार पानी पीयें, उतनी बार नेत्रों पर ठण्डे जल के छपके दें। * पैरों को धोकर साफ रखें और पैरों में तेल की मालिश करें। * बालों को हमेशा साफ रखें। * नाक के बाल नहीं उखाड़ने चाहिए। - श्वेता कोहली गुरदासपुर

देख-रेख



थोड़ा ऑक्जेलिक एसिड पानी में घोलकर लगाने से स्याही के धब्बे साफ हो जाते हैं। इस एसिड का बहुत हल्का मिश्रण ही लगाया चाहिए। जब एसिड सूख जाए तो उस स्थान को स्वच्छ पानी से धो लेना चाहिए। - कीर्ति

होली-2012 के अवसर पर युद्धवीर फाउण्डेशन हैदराबाद कहानी, कविता, कार्टून/कैरीकेचर एवं चित्रकला प्रतियोगिता

होली के साथ भारतीय साहित्य का निकटतम संबंध रहा है। होली के पावन अवसर पर साहित्यकारों की प्रतिभा को प्रोत्साहित करने हेतु युद्धवीर फाउण्डेशन, हैदराबाद द्वारा कहानी, कविता, कार्टून/कैरीकेचर एवं चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। कहानी एवं कविता का विषय जीवन के किसी भी पहलू से संबंधित हो सकता है। कार्टून-कैरीकेचर राजनीतिक विषय पर होने चाहिए। यह प्रतियोगिताएँ तीन वर्गों में हैं -

- कहानी प्रतियोगिता**
प्रथम वर्ग - 16 से 40 वर्ष तक के रचनाकार।
द्वितीय वर्ग - 40 वर्ष से अधिक उम्र के रचनाकार।
- कविता प्रतियोगिता**
प्रथम वर्ग - 16 वर्ष से 40 वर्ष तक के रचनाकार।
द्वितीय वर्ग - 40 वर्ष से अधिक उम्र के रचनाकार।
- कार्टून/कैरीकेचर प्रतियोगिता**
प्रथम वर्ग - 16 वर्ष से 40 वर्ष तक के रचनाकार।
द्वितीय वर्ग - 40 वर्ष से अधिक उम्र के रचनाकार।
कार्टून/कैरीकेचर A4 आकार के कागज पर रंगीन क्रेयान से बने होने चाहिए।
- चित्रकला प्रतियोगिता**
प्रथम वर्ग - 8 वर्ष से 15 वर्ष तक के चित्रकार।
द्वितीय वर्ग - 15 वर्ष से अधिक उम्र के चित्रकार।
चित्र रंगीन क्रेयान से A4 आकार के कागज पर बने होने चाहिए।

प्रत्येक वर्ग में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय घोषित रचनाएँ पुरस्कृत की जाएँगी। प्रत्येक वर्ग में एक-एक सांत्वना पुरस्कार का प्रावधान भी है।

- नियमावली**
- 1. प्रतियोगिता में सभी पाठक भाग ले सकते हैं।
- 2. रचना शनिवार, 18 फरवरी, 2012 तक प्रकाशित कृपण के साथ डेली हिन्दी मिलाप के कार्यालय में पहुँच जानी चाहिए। अंतिम तिथि के पश्चात् प्राप्त रचना स्वीकार नहीं की जाएगी।
- 3. रचना मौलिक व अप्रकाशित होनी चाहिए।
- 4. रचना फुलस्केप कागज के एक ओर हाशिया छोड़कर टाईप की हुई या साफ अक्षरों में लिखी होनी चाहिए। अपना नाम, पता व फोन नं. रचना के साथ न लिखकर प्रकाशित कृपण में ही लिखें।
- 5. प्रतियोगिता के परिणाम डेली हिन्दी मिलाप के 'होली परिशिष्ट 2012' में प्रकाशित किये जाएँगे।
- 6. रचनाओं को प्रकाशित करने के अधिकार 'युद्धवीर फाउण्डेशन' के पास सुरक्षित रहेंगे।
- 7. विजेता रचनाकार, युद्धवीर फाउण्डेशन द्वारा 30-4-2012 को आयोजित समारोह में पुरस्कृत किये जाएँगे।
- 8. 'युद्धवीर फाउण्डेशन' द्वारा गठित निर्णायक समिति का निर्णय अंतिम रहेगा।

नोट - 'हिन्दी मिलाप' तथा 'युद्धवीर फाउण्डेशन' से सम्बद्ध व्यक्ति के लिए उपरोक्त प्रतियोगिता में भाग लेना मना है।

प्रत्येक रचना के साथ रचनाकार की एक पासपोर्ट साईज की फोटो व निम्न कृपण लगा होना अनिवार्य है, अन्यथा रचना, प्रतियोगिता के लिए स्वीकार नहीं की जाएगी।

इस पते पर भेजें-

युद्धवीर स्मारक..... प्रतियोगिता
डेली हिन्दी मिलाप
5-4-674, कट्टलमंडी, हैदराबाद-500117

कूपन

युद्धवीर फाउण्डेशन द्वारा होली के अवसर पर युद्धवीर स्मारक कहानी, व्यंग्य, कार्टून एवं चित्रकला प्रतियोगिता - 2012 द्वारा - डेली हिन्दी मिलाप, कट्टलमंडी, हैदराबाद - 500117 में युद्धवीर फाउण्डेशन द्वारा आयोजित युद्धवीर स्मारक कहानी/ कविता/ कार्टून-कैरीकेचर/चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु अपनी मौलिक व अप्रकाशित रचना/चित्र प्रेषित कर रहा/रही हूँ। मुझे आयोजकों द्वारा निर्धारित नियम एवं निर्णय स्वीकार होगा।

नाम आयु.....

योग्यता व्यवसाय.....

पता, फोन नं.....

रचनाकार के हस्ताक्षर.....

वर्ग पहली क्रमांक -2430

1		2		3		4
	5			6		
7		8		9		10 11
	12 13		14		15	
16 17		18				
	19			20		21
		22 23				
24		25		26		27
		28				29

- बायें से दायें :
1. एक संख्या 2. अशक्य 3. जिले का एक भाग 4. हस्ताक्षर 5. राजनीतिक दल 6. विश्वासघात 7. पकड़ना 8. देने की क्रिया 9. सवारी 10. कृष्ण 11. एक संख्या 12. मक्का यात्रा 13. मुसलमान 14. अंगूर 15. दारू की तरह 16. असाध्य 17. अशक्य 18. असाध्य 19. अशक्य 20. अशक्य 21. अशक्य 22. अशक्य 23. अशक्य 24. एक संख्या 25. खराब 26. असाध्य 27. अशक्य 28. अशक्य 29. अभिनेता

पिछली वर्ग पहली का उत्तर

स	र	स	र	स	भा	नि	त
द	म	द	क	ता		ना	म
स	ह	अ	म	ना	सो		द
ठ	वा	भ	न	न	श्री		न
	अ	द	र	पा	वा		गो
सा	त	भ	न	द	र		पा
	म		क	दी	र		ज
ओ	स	ला	सा	व	ली		ल
त	न	ह	र	द	र		न
							या